शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहु विषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Year -1
Vol -4
March
2024

नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अध्ययन

[1]इन्द्रवेश आर्य (सहायक आचार्य)
राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त महाविद्यालय, चिरगॉव, झॉसी (उप्र)
[2]आनन्द कटारे (सहायक आचार्य)
राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त महाविद्यालय, चिरगॉव, झॉसी (उप्र)

सारांश

सरकार की नीति के अनुसार प्रत्येक जिले में एक जवाहर नवोदय विद्यालय की स्थापना की जाती है। तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने नवोदय विद्यालय की स्थापना की नींव रखीं। नवोदय विद्यालय में पढ़ने पर विद्यार्थी को मुफ्त शिक्षा प्राप्त होती हैं। इसके अतिरिक्त उसे मुफ्त आवास, मुफ्त भोजन और कई तरह की खेल सुविधाएँ भी प्राप्त होती हैं। नवोदय विद्यालय का वातावरण बेहद स्वच्छ वातावरण होता है, यहाँ पर पढ़ने वाले विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनना सिखाया जाता है। व्यक्ति समाज का अंग है और उस पर समाज के अनेक दबाव तथा प्रभाव पड़ते हैं। इन दबाव तथा प्रभावों से व्यक्तित्व का निर्माण होता है। व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र का फल हैं। व्यक्तित्व मानसिक विकास और शारीरिक विकास का योग नहीं है। उसके व्यवहार में एक एकत्व दिखलाई पड़ता है। उसका मानसिक एवं शारीरिक विकास एक ही क्रिया के दो ऐसे पहलू हैं, जो परस्पर निर्भर रहते हैं। नवोदय विद्यालय के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी व्यक्तित्व का विकास पूर्ण रुप से कर सकें, अतएव उनको एक पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक अनुकूलन की आवश्यकता होती है, जो छात्रों के कुशलतम सफलता के लिए महत्वपूर्ण कदम हैं। जिससे विद्यार्थी स्वर्णिम भविष्य की ओर राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करें। प्रस्तुत शोध में नवोदय विद्यालय बरूआसागर, झाँसी (उ.प्र.) के छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध हेतु वर्ष 24-2023 में अध्ययनरत् नवोदय विद्यालय बरूआसागर में उच्चतर माध्यमिक स्तर के कक्षा -9 के 50 छात्र एवं 50 छात्राओं का चयन किया गया है। जिसमें निष्कर्ष रूप में यह ज्ञात हुआ है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व में कोई अन्तर नहीं है।

मुख्य शब्द - नवोदय विद्यालय, व्यक्तित्व, छात्र एवं छात्रायें

E-ISSN 2584-2447
Year -1 Vol -4 March 2024

प्रस्तावना

शिक्षा स्थिर नहीं है, यह एक गतिशील प्रक्रिया है। शिक्षा और समाज का साथ-साथ चलना आवश्यक हैं। जब-जब समाज में परिवर्तन होता है, तब-तब शिक्षा में परिवर्तन होना आवश्यक है। ऐसा नहीं हो सकता कि समाज आगे निकल जाए और शिक्षा पीछे रह जाए। जैसे समाज में पहले आध्यात्मिक विकास करना शिक्षा का उद्देश्य हो गया, किन्तु समाज आध्यात्मिकता के मार्ग पर चला नहीं है। शिक्षा समाज को अच्छा से अच्छा बनाना चाहती है। इसलिए वह अपने में भी परिवर्तन करती रहती है और एक सी कभी नही रहती। शिक्षा कामधेनु का कल्पतरू के समान व्यक्ति की सब मनो कामनाओं को पूर्ण करती है और उसका सर्वांगीण विकास करती है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और सामंजस्यपूर्ण विकास में योग देती हैं। व्यक्ति की वैयक्तिता का पूर्ण विकास करती है। उसे वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने में सहायता देती है। उसे जीवन और नागरिकता के कत्र्तव्यों और दायित्वों के लिए तैयार करती है और उसके व्यवहार, विचार और दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है, जो समाज देश और विश्व के लिए हितकर होता है।

डॉ. ए.एस. अल्तेकर - “प्राचीन भारतीय शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों एवं आदर्शों का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है- ईश्वर भक्ति एवं धार्मिकता का समावेश चरित्र का निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, नागरिक एवं सामाजिक कत्र्तव्य पालन की भावना का समावेश, सामाजिक कुशलता की उन्नति और राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण एवं प्रसार।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्तित्व का विकास करना है। व्यक्तित्व के विकास में शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक आदि सभी प्रकार का विकास सम्मिलित हैं।

चरों का परिभाषीकरण

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व की व्याख्या मैसलों के अनुसार, “मानव अभिप्रेरक जन्मजात होते हैं और उन्हें प्राथिमकता या शक्ति के आरोही पदानुक्रम में सुव्यवस्थित किया जा सकता है।”

(अ) शारीरिक या दैहिक आवश्यकता - इस श्रेणी की आवश्यकता में भोजन करने की आवश्यकता, पानी पीने की आवश्यकता, सोने की आवश्यकता, यौन की आवश्यकता तथा सीमान्त तापक्रम से बचने की आवश्यकता आदि को सम्मिलित किया गया है। ये सारे जैविक प्रणोदन का सीधा संबंध प्राणी के जैविक सम्पोषण से होता है। इस श्रेणी की आवश्यकता की प्राथमिकता या प्रबलता सबसे अधिक है। जब कोई व्यक्ति जैविक आवश्यकताओं की संतुष्टि नहीं कर पाता है, तो वह अन्य उच्च स्तरीय आवश्यकताओं की संतुष्टि की बात ही नहीं सोचता हैं। जैसे- जो व्यक्ति भूख या प्यास से तड़प रहा होता है, उसके मन में सुरक्षा, आत्म-सम्मान जैसी अन्य उच्च-स्तरीय आवश्यकता का ख्याल मन में नहीं आ सकता है।

(ब) सुरक्षा की आवश्यकता - जब व्यक्ति की जैविक आवश्यकताओं की संतुष्टि हो जाती है तो वह पदानुक्रम के दूसरे स्तर की आवश्यकता अर्थात् सुरक्षा की आवश्यकता की ओर अग्रसर होता है और उसका व्यवहार इस आवश्यकता से काफी प्रभावित होने लगता है। इस श्रेणी की आवश्यकता में शारीरिक सुरक्षा, स्थिरता, निर्भरता, बचाव, डर, चिन्ता आदि की अनुभूतियों से मुक्ति आदि सम्मिलित होते हैं। इसमें नियम कानून बनाये रखने की आवश्यकता, विशेष क्रम आदि बनाये रखने की आवश्यकता को भी इसी श्रेणी में सम्मिलित किया है। इस तरह की आवश्यकता बच्चों में अधिक प्रबल होती है, क्योंकि वे अन्य लोगों की अपेक्षा अपने आपको अधिक निःसहाय एवं दूसरों पर आश्रित समझते हैं। एक स्वस्थ एवं परिपक्व वयस्क में सुरक्षा की आवश्यकता होती है और वह उसमें संतुलित ढंग से सन्तुष्ट होता है। मैसलो के अनुसार सुरक्षा की आवश्यकता कुछ खास तरह के तंत्रिकातापी या स्नायुविकृत व्यक्ति जैसे- मनोग्रस्ति-बाध्यता के रोगियों में अधिक सुस्पष्ट होता है। ऐसे लोग इर्द-गिर्द की हालातों को खौंफनाक एवं खतरनाक समझकर अपने में सुरक्षा की आवश्यकता पर अधिक जोर डालते हैं तथा अधिक समय एवं शारीरिक ऊर्जा की खपत करते हैं और यदि इसके बाबजूद भी इन्हें अपने प्रयास में सफलता नही मिलती है।

(स) संबद्धता एवं स्नेह की आवश्यकता - संबद्धता की आवश्यकता से तात्पर्य अपने परिवार या समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान पाने की इच्छा से तथा किसी संदर्भ समूह की सदस्यता

प्राप्त करने में अच्छे पड़ोसी से संबंध बनाये रखने से होता है। स्नेह की आवश्यकता से तात्पर्य दूसरों की स्नेह देने एवं दूसरों से स्नेह पाने की आवश्यकता से होती है।

(द) सम्मान की आवश्यकता - सम्मान की आवश्यकता व्यक्ति में तब उत्पन्न होती है, सम्मान की आवश्यकता में मैसलो ने दो प्रकार की आवश्यकताओं को सम्मिलित किया है- आत्म सम्मान की आवश्यकता तथा दूसरों से सम्मान पाने की आवश्यकता। पहले प्रकार की आवश्यकता में उत्तम क्षमता प्राप्त करने की इच्छा, आत्म-विश्वास, व्यक्तिगत बर्धन, उपयुक्तता, उपलब्धि स्वतंत्रता आदि की भावना सम्मिलित होती है।

(य) आत्म-सिद्धि की आवश्यकता - आत्म-सिद्धि से तात्पर्य आत्म-उन्नति की एक ऐसी अवस्था से होती है, जहाँ व्यक्ति अपनी योग्यताओं एवं अन्तः क्षमताओं से पूर्णरूपेण अवगत होता है तथा उसके अनुरूप अपने आप को विकसित करने की इच्छा करता है।

नवोदय विद्यालय - विशिष्ट प्रतिभा के बच्चों को तेजी से प्रगति के अवसर उपलब्ध कराये जाने चाहिए, चाहे वे इसकी कीमत अदा करने की क्षमता न रखते हो। इस दृष्टि से राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में यह संकल्प किया गया कि देश के विभिन्न भागों में एक निश्चित आधार पर ऐसे विद्यालय स्थापित किये जाये, जिनमें नई-नई खोजों तथा प्रयोगों के लिए समुचित अवसर प्राप्त हो सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया, कि जिन बच्चों में विशेष प्रतिभा या अभिरूचि हो, उन्हें अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराने के लिये गति निर्धारक विद्यालय की स्थापना की जाये। कार्य योजना 1986 में ऐसे विद्यालय खोलने के लिए कदम उठाये गये। इन विद्यालयों को नवोदय विद्यालय का नाम दिया गया।

अध्ययन की आवश्यकता - नवोदय विद्यालय की आवश्यकता पहली बार 1985 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गाँधी द्वारा जगाई गई थी। नवोदय विद्यालय समिति के उद्देश्य मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के प्रतिभाशाली बच्चों को उनके परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर ध्यान दिए बिना, गुणात्मक आधुनिक शिक्षा प्रदान करना जिसमें सामाजिक मूल्यों, पर्यावरण के प्रति जागरूकता, साहसिक कार्यकलाप और शारीरिक शिक्षा जैसे

महत्वपूर्ण घटकों का समावेश हो। वर्तमान समय में कुल 660 नवोदय विद्यालय स्थापित है। व्यक्तित्व को हम किसी व्यक्ति के चरित्र से पृथक नहीं कर सकते। जिस प्रकार चित्र विभिन्न रंगों का मेल नहीं है, कविता विभिन्न शब्दों का योग नहीं है, परन्तु कुछ और ही हैं। व्यक्तित्व में व्यक्ति की आत्मा की छाप रहती है। अतः व्यक्तित्व एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं, जो व्यक्ति को अपूर्णता से पूर्णता की ओर ले जाती है। छात्रों को व्यक्तित्व निर्माण के लिए मानसिक के साथ शारीरिक रूप से भी संकल्पित होना आवश्यक है। जिससे ही उनमें उत्तम चरित्र का निर्माण हो सकें।

समस्या की उत्पत्ति - बालक का विकास समाज में ही सम्भव है। नवोदय विद्यालय के बालक अपने घर परिवेश को छोड़कर आवासीय विद्यालय में अपने गुरूओं की शरण में आकर शिक्षा ग्रहण करते हैं और स्वर्णिम भविष्य की ओर अग्रसर होते हैं। वह भविष्य में कई सरकारी पदों पर विराजते हैं, तथा व्यापारी बड़े कृषक बनकर राष्ट्र की सेवा में योगदान देते हैं। अतः लोक व्यवस्था, समाचार एवं उत्तम चरित्र, सदाचार के नियमों का पालन करना, व्यक्तित्व के लिए अग्रिम सोपान हैं। अतः बालकों में व्यक्तित्व एक ऐसा पक्ष हैं, जो बालक के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक तत्व हैं। बालक के मन में हमेशा उत्तम परिवेश में अपने को सर्वश्रेष्ठ करने की समस्या हमेशा उत्पन्न होती है।

समस्या कथन

"नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अध्ययन"

व्यक्तित्व से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

समिधा पाण्डे एवं विजय लक्ष्मी (2006), ने किशोरों की व्यक्तित्व विशेषताएं तथा निर्भरता प्रवृत्ति शीर्षक पर अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य लाभान्वित तथा अलाभान्वित किशोरों की निर्भरता तथा विभिन्न व्यक्तित्व विशेषतायें प्राप्त करना है। अतः लाभान्वित किशोर वे हैं जो अभिभावक देखभाल से वंचित नहीं है तथा किसी भी प्रकार की वंचिता से पीड़ित है। यह निर्भरता मापने के लिये सिन्हा की निर्भरता प्रवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है तथा व्यक्तित्व विशेषतायें मापने के लिये आइजनेक व्यक्तित्व प्रश्नावली का प्रयोग किया गया था। शोधार्थी ने न्यादर्श रूप में 150 किशोरों का चयन पटना शहर से किया।

E-ISSN 2584-2447
Year -1 Vol -4 March 2024

परिकल्पना परीक्षण करने के उपरान्त निष्कर्ष यह प्रकट करते हैं कि ये सभी अलाभान्वित किशोर सांवेगिक उन्नयन तथा समर्थन चाहते हैं। यह जिम्मेदारी है कि उन्हें जीवन के हर पहलू में अधिक आत्मविश्वास तथा आत्मनिर्भर बनने में सहायता व समर्थन प्रदान करें। अतः अलाभान्वित किशोरों को समाज से शारीरिक व मानसिक शक्ति प्राप्त करने की आवश्यकता है। उन्हें केवल दया के आधार पर नहीं छोड़ा जा सकता है।

जागृति तंवर (2010), जाग्रति तंवर ने "अन्तर्मुखी एवं बर्हिमुखी व्यक्तित्व का किशोरी के आत्मविश्वास, समायोजन एवं उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन" शीर्षक पर शोध कार्य किया। शोध अध्ययन हेतु शोधार्थिनी द्वारा राजस्थान राज्य के कोटा जिले के 13 सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर कक्षा ग्यारहवीं एवं बारहवीं के 434 किशोर एवं किशोरियों को न्यादर्श में शामिल किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

नवोदय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

नवोदय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमांकन

1. प्रस्तुत अध्ययन में शोध के रूप में झाँसी जनपद में स्थित बरूआसागर नवोदय विद्यालय का चयन किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध नवोदय विद्यालय के छात्र-छात्राओं तक सीमित है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा छात्र-छात्राओं को सम्मिलित किया गया है, जिनकी कुल संख्या 100 तक सीमित है।

अनुसंधान परिचय

वर्णनात्मक अनुसंधान

E-ISSN 2584-2447
Year -1 Vol -4 March 2024

शिक्षा तथा मनोविज्ञान सम्बन्धी अनुसंधान के क्षेत्र में वर्णनात्मक अनुसंधान का सबसे अधिक महत्व है, और यह बड़े व्यापक-रूप में व्यवहार में आया है।

सर्वेक्षण अनुसंधान

सर्वेक्षण अनुसंधान का प्रयोग मुख्य रूप से सामाजिक विज्ञानों में वर्तमान की किसी स्थिति घटना या वैचारिक चिन्तन आदि से सम्बन्धित समस्या के अध्ययन के लिए किया जाता है।

जनसंख्या

जनसंख्या को अंग्रेजी में यूनीवर्स कहा जाता हैं। यूनीवर्स का शाब्दिक अर्थ विश्व या समष्टि होता है, किन्तु निदर्शन में इसका अर्थ इकाईयों के योग या सम्पूर्णता से है।

शोध न्यादर्श विधि का चुनाव

प्रस्तुत शोध में झाँसी जनपद के बरूआसागर में स्थित नवोदय विद्यालय के कक्षा-9 के छात्र एवं छात्राओं का चयन साधारण यादृच्छिक विधि से किया गया। द्वितीय स्तर पर चयनित स्तर के 100 विद्यार्थियों (छात्र/छात्राओं) का चयन साधारण यादृच्छिक विधि (Simple Randam Sampling) से किया गया।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

परीक्षण का चयन

शोधार्थी के व्यक्तित्व समायोजन के सन्दर्भ में एक ही परीक्षण आर.के. ओझा द्वारा रचित 'व्यक्तित्व समायोजन मापनी' उपलब्ध हो सका। फलस्वरूप शोध के सन्दर्भ में इसी उपलब्ध परीक्षण को वरीयता प्रदान की गई।

सांख्यिकीय विधियाँ

शोधकर्ता द्वारा सांख्यिकीय विधियों के रूप में मध्यमान, प्रमाप विचलन, टी-परीक्षण का उपयोग किया गया है।

E-ISSN 2584-2447
Year -1
Vol -4
March
2024

परिकल्पना का विश्लेषण

परिकल्पना - व्यक्तित्व

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर		परिणाम
छात्र	50	30.68	4.21	2.60	0.05	1.98	अस्वीकृत
छात्रायें	50	33.70	4.69				

100 – 2 = 98

उक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्राप्त टी-मूल्य (2.60), 0.05 सार्थकता स्तर 1.98 से अधिक है। अतः उपर्युक्त शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है व शोध परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि नवोदय विद्यालय के छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष - परिकल्पना के परीक्षण से ज्ञात होता है कि नवोदय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर हैं।

निहितार्थ - प्रस्तुत शोध व्यक्तित्व आधारित हैं, जिसमें प्रमापीकृत व्यक्तित्व मापनी के द्वारा छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व का मापन किया गया। उपयुक्त शोध में परिकल्पना के परीक्षण से यह ज्ञात हुआ कि नवोदय विद्यालय के छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व का सम्प्रत्यय आदिकाल के समय से है, जिस पर वंश और वातावरण का प्रभाव स्वाभाविक रूप से पड़ता है। अतः मानव जीवन में व्यक्ति के सुदृढ़ व्यक्तित्व निर्माण हेतु उसके आस पास के लोगों द्वारा मार्गदर्शन किया जाना आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- समिधा पाण्डे एवं विजय लक्ष्मी (2006), Samidha, Pandey and Vijay Lakshmi (2006); “Personality Characteristics and Dependent Proneness of Adolescents”, Psycho-Lingua, Agra: Publish-Linguistic Association of India, ISSN:0377-3132, Vol-36, No-2, July-2006, Pg-156-158.

E-ISSN 2584-2447
Year -1 Vol -4 March 2024

- जागृति तंवर (2010) "अन्तर्मुखी एवं बर्हिमुखी व्यक्तित्व का किशोरों के आत्मविश्वास समायोजन एवं उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन", अप्रकाशित शोध प्रबन्ध पी.एच.डी. (शिक्षाशास्त्र) उज्जैन (म.प्र.)
- सिंह, अरूण कुमार एवं आशीष कुमार सिंह, "व्यक्तित्व का मनोविज्ञान"; मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पटना, पेज नं.- 435-437, 1-41, 57.
- गुप्ता, प्रो0 एस0पी0 (2012); "अनुसंधान संदर्शिका", शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पेज नं.- 01-22, 37-53, 54-61, 62-90, 107-120, 165-180, 181-191, 210-223, 261-292, 325-344, 345-362, 470-498.
- राय, पारसनाथ, डॉ. सी.पी. राय (2012); "अनुसंधान परिचय", लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, पेज नं.- 95-107, 233-287, 19-20, 119.
- पाठक, पी0डी0 (2020); भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पेज नं.-4-5
- मदान, पूनम, गुरसरनदास त्यागी (2016); सम सामयिक भारतीय शिक्षा के मूल आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा पेज नं. 4-5. ISBN No. – 978-93-85079-77-9
- भार्गव, विवेक (2014); शैक्षिक मनोविज्ञान, (शिक्षण अधिगम प्रक्रिया) राखी प्रकाशन आगरा, पेज नं. 282. ISBN No – 978-93-80375-41-0
- www.samajkaryshiksha.com
- www.navguru.in
- www.navodaya.in
- www.navodaya.gov.in
- www.tughindi.com
- www.brainly.in